

आयोजक संस्थान:

इस संस्थान की स्थापना 22 फरवरी, 2001 को हुई थी। इसका मुख्यालय पटना में स्थित है और इसका एक क्षेत्रीय शोध केंद्र रांची (झारखंड) में है। इसके अलावा, बिहार के बक्सर और झारखंड के रामगढ़ में संस्थान के दो कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) भी हैं। अपनी स्थापना के बाद से ही, यह संस्थान इस क्षेत्र में कृषि के विकास और कम संसाधन वाले किसानों की आजीविका को बेहतर बनाने के लिए कई तरह के शोध, प्रसार और प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। ये गतिविधियां मुख्यतः भूमि एवं जल संसाधनों के उचित प्रबंधन, फसल, बागवानी, मछली पालन, पशुपालन, बकरी एवं कुक्कुट पालन, कृषि वानिकी, कृषि मौसम परामर्श, खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, किसानों के सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं से जुड़ी हैं। संस्थान हर साल किसानों और कृषि से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

संस्थान तक कैसे पहुँचें:

यह संस्थान पशु चिकित्सा महाविद्यालय से 1 किलोमीटर और जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। शहर के प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन से इसकी दूरी: पटना जंक्शन से 7 किलोमीटर, पाटलीपुत्र जंक्शन से 5 किलोमीटर और फुलवारी शरीफ स्टेशन से 3 किलोमीटर। इन सभी स्टेशनों पर प्रीपैड टैक्सी या ऑटो उपलब्ध है।

पाठ्यक्रम निदेशक

डॉ. संजीव कुमार

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष
फसल अनुसंधान प्रभाग

डॉ. मनीषा टम्टा

वैज्ञानिक (कृषि मौसम विज्ञान)
फसल अनुसंधान प्रभाग

पाठ्यक्रम सह-निदेशक

डॉ. अनिर्बान मुखर्जी

वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)
सामाजिक-आर्थिक एवं प्रसार प्रभाग
आर.के. रमण

डॉ. ए.के. दूबे

वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान)
फसल अनुसंधान प्रभाग
डॉ. पी.के. सुंदरम

वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी)
सामाजिक-आर्थिक एवं संचार प्रभाग

वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी)
भूमि एवं जल प्रबंधन प्रभाग डॉ.

डॉ. राकेश कुमार

वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन)
पशुधन और मात्स्यिकी प्रबंधन प्रभाग

अध्यक्ष

डॉ. अनुप दास

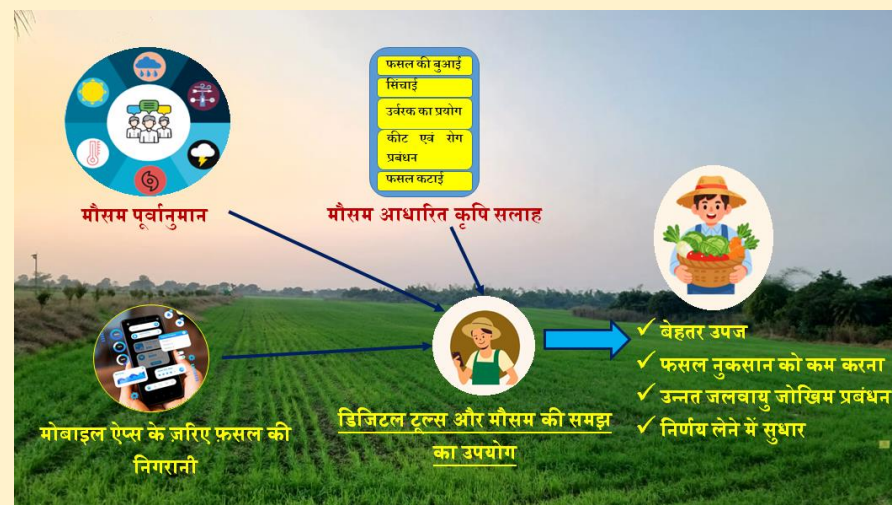
निदेशक

भा.कृ.अनु.प. का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

प्रशिक्षण कार्यक्रम

युवाओं का मौसम के अनुकूल स्मार्ट कृषि हेतु कौशल विकास

दिनांक : 7-9 अक्टूबर, 2026



अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) निधि के अंतर्गत

आयोजक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी
अनुसंधान परिसर, पटना-800014



पृष्ठभूमि:

दैनिक कृषि प्रबंधन गतिविधियाँ, यानी हमारे कृषक समुदाय द्वारा खेती से जुड़े निर्णय लेना, उस स्थान के प्रचलित मौसम और प्रमुख जलवायु परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं। विगत वर्षों में मौसम के मिजाज में काफी हद तक बदलाव आया है, अनियमित वर्षा और बढ़ता तापमान एक सामान्य बात बन चुकी है। इन जल-मौसम संबंधी अनिश्चितताओं के कारण खेती को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इसके अलावा, सूखे, बाढ़, ओलावृष्टि, पाला, ठंड और हीटवेव (लू) जैसी चरम मौसमी घटनाएं स्थिति को और बिगाड़ देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप फसल को भारी नुकसान होता है। किसानों को इन अप्रत्याशित मौसमी घटनाओं के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान से निपटने के लिए उचित समय पर मौसम पूर्वानुमान, कृषि सलाह और सरकार द्वारा वित्तीय सहायता ही मददगार हो सकती है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तकनीकों के आगमन के साथ, किसानों को मौसम पूर्वानुमान और कृषि-मौसम संबंधी सलाह तेजी से प्रसारित करने के लिए भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में कई डिजिटल प्लेटफॉर्म/उपकरण विकसित किए गए हैं। परंतु विभिन्न कारणों जैसे साक्षरता/स्मार्टफोन की अनुपलब्धता/तकनीकी कौशल की कमी आदि की वजह से इन उन्नत तकनीकों की ज़मीनी स्तर पर पहुँच बहुत सीमित है। अब समय आ गया है कि हम अपने शिक्षित कृषि-उन्मुख युवाओं को तकनीकी कौशल संवर्धन प्रशिक्षण प्रदान करके अपने कृषक समुदाय को भी इस तकनीकी क्रांति का एक हिस्सा बनाएं। यह हमारे देश की तस्वीर को एक 'तकनीक-विहीन' (tech-poor) से 'तकनीक-सक्षम' (tech-powered) कृषक प्रधान देश में बदल सकता है। अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP) निधि के अंतर्गत, हम अपने कृषि-उन्मुख इच्छुक युवाओं का 'मौसम-समझदार-किसान' (weather-wise-farmer) बनने और इस व्यावहारिक (hands-on) प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे साथ अपनी डिजिटल कृषि यात्रा शुरू करने के लिए स्वागत करते हैं।

कार्यक्रम का विवरण:

1	मॉड्यूल	युवाओं का मौसम के अनुकूल स्मार्ट कृषि हेतु कौशल विकास	
2	लक्षित समूह	- बिहार के अनुसूचित जाति (SC) के किसान - शिक्षित एवं न्यूनतम 8वीं पास - स्मार्टफोन उपयोगकर्ता - महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहन	- पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर - डिजिटल टूल का उपयोग करने के इच्छुक
3	अवधि	3 दिन (8 घंटे/दिन)	
4	तिथियां	7-9 अक्टूबर, 2026	
5	अधिकतम प्रतिभागियों की संख्या	20	
6	प्रशिक्षण का उद्देश्य	‘मौसम-समझदार-किसान’ (Weather-Wise-Farmer) समुदाय का निर्माण करना। - खेत के स्तर पर दैनिक कृषि कार्यों हेतु निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाना।	
7	कार्यक्रम की रूपरेखा (प्रस्तावित):		
	दिनांक / दिन	विवरण / विषय	
	7-10-2026 (दिन 1)	स्मार्ट मौसम प्रबंधन के माध्यम से जलवायु सहनशीलता का निर्माण	
		भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) द्वारा प्रदत्त मौसम पूर्वानुमान और चेतावनी सेवाएं किसानों द्वारा ज्ञान और अनुभव साझा करने का सत्र :अनुभव की गई चरम	

		मौसम की घटनाएं और उनसे हुए नुकसान
		कृषि प्रबंधन और समेकित कृषि प्रणाली (IFS) के लिए मौसम की समझ का उपयोग
		फसल -कीट- बीमारी और मौसम का परस्पर संबंध एवं प्रबंधन
		व्यावहारिक सत्र: मोबाइल ऐप और वेबसाइट जैसे मौसम सूचना स्रोत (ब्राउज़िंग, डाउनलोड, इंस्टॉलेशन, अपडेट)
	8-10-2026 (दिन 2)	एक्सपोजर विजिट: संस्थान का शोध क्षेत्र और आईएफएस इकाई
		आईएमडी द्वारा प्रदत्त कृषि मौसम परामर्श सेवाएं
		मौसम सूचकांक आधारित फसल बीमा
		जलवायु-अनुकूल खेती के लिए मौसम आधारित पशुधन प्रबंधन
		जलवायु-अनुकूल सब्जी उत्पादन
		सूक्ष्म जलवायु सुधार तकनीकों के माध्यम से जलवायु सहनशीलता का निर्माण
		व्यावहारिक सत्र: कृषि मौसम सलाहकार उपकरण (पंजीकरण, लॉगिन, डेटा प्रविष्टि/प्राप्ति, प्रासंगिक मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से सलाह का उपयोग)
9-10-2026 (दिन 3)	कृषि में कुशल जल प्रबंधन के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग	
	मौसम-स्मार्ट सिंचाई शेड्यूलिंग तकनीक	
	चरम मौसम स्थितियों में मत्स्य पालन प्रबंधन	
	व्यावहारिक सत्र: ऐप/टूल से जुड़े प्रश्न और प्रतिक्रिया सत्र	
8	अपेक्षित परिणाम	इस प्रशिक्षण के आखिर तक, प्रतिभागी - ● मौसम के अनुकूल लाभदायक कृषि प्रबंधन के महत्व को समझने में सक्षम बनेंगे। ● मौसम पूर्वानुमान और परामर्श सेवाओं पर समझ विकसित कर पाएंगे। ● मौसम और परामर्श से जुड़ी वेबसाइटों तथा मोबाइल एप्लीकेशन का स्वयं उपयोग करने में सक्षम बनेंगे। ● प्राप्त तकनीकी ज्ञान को 'मौसम मित्र' के रूप में अन्य किसानों के साथ साझा कर पाएंगे।
9	इस कार्यक्रम में क्यों शामिल हों?	● खेती को मौसम के अनुकूल, आपदा के अनुकूल और भविष्य के लिए तैयार बनाने हेतु। ● खेत के स्तर पर दैनिक कृषि कार्यों के लिए निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि करने हेतु। ● मौसम से जुड़ी फसल बीमा योजनाओं पर मार्गदर्शन पाने हेतु। ● व्यावहारिक प्रशिक्षण: समय पर मौसम पूर्वानुमान और कृषि परामर्श जानकारी पाने के लिए डिजिटल उपकरणों को चलाने की दक्षता विकसित करने हेतु। ● मोबाइल एप्लिकेशन के उपयोग और कृषि सलाहकार जानकारी की उपयोगिता पर शंकाओं का समाधान पाने हेतु।
10	प्रशिक्षण का स्थान	भा.कृ.अनु.प. का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना का मुख्य परिसर

आवास:

संस्थान में एक सुसज्जित किसान छात्रावास है। जिसमें सभी प्रतिभागियों के निःशुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था की जाएगी।